श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश पर्व पर विशेष

त्याग, सेवा के प्रतीक चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी

गुरु रामदास जी, जिनका बचपन का नाम भाई जेठा था, का जन्म 2 संवत 1591 विक्रम को भाई हरिदास जी और माता दया जी के घर हुआ था, जो चूना मंडी लाहौर के निवासी थे। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण, उनका नाम भाई जेठा जी रखा गया। जिस दिन भाई जेठा जी का जन्म हुआ, उस समें गुरु नानक देव जी लगभग 65 वर्ष के थे, श्री गुरु अमरदास जी 55 वर्ष के और भाई लहना जी 30 वर्ष के थे। चारों गुरु शारीरिक रूप से उपस्थित थे, फिर भी मिलन केवल प्रथम गुरु और भाई लहना जी के बीच ही हुआ था।

भाई जेठा जी अभी बाल्यावस्था की दहलीज पर ही थे कि पहले उनकी माता जी और फिर उनके पिता श्री हरिदास जी इस संसार से विदा हो गए। जब वे अनाथ हो गए, तो उनकी नानी उन्हें अपने गाँव बसरके ले आईं। पोते के लाहौर से अपने ननिहाल पहुँचने की खबर पूरे गाँव में फैल गई।

गाँव के कई सज्जन पुरुष और महिलाएँ युवा जेठा को सांत्वना देने आने लगे। इन सांत्वना देने वालों में गुरु अमरदास जी भी थे। भाई जेठा जी की दुःखद स्थिति से उनके कोमल हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव से उनकी पारस्परिक निकटता काफ़ी बढ़ने लगी।

भाई जेठा जी अपने ननिहाल में रहकर घोंघे बेचते थे और घर का गुजारा करते थे । इस दौरान, जब भी गुरु अमरदास जी खडूर साहिब से बासरके आते, तो भाई जेठा जी से ज़रूर मिलते और वे घंटों सांसारिक और आध्यात्मिक विषयों पर बातें करते। जब श्री गुरु अमरदास जी ने गोंडे खत्री के अनुरोध पर ब्यास नदी के तट पर गोइंदवाल साहिब नगर बसाया, तो उनके कई रिश्तेदार और मित्र भी गोइंदवाल साहिब आए।

गुरु के दर्शन की लालसा भाई जेठा जी को भी यहाँ खींच लाई। उस समय उनकी आयु लगभग 12 वर्ष थी। यद्यपि वे अभी बालक ही थे, परन्तु श्री गुरु अमरदास जी के प्रभाव से उनकी बुद्धि परिपक्व होती जा रही थी। इस परिपक्वता के कारण भाई जेठा जी पर श्री गुरु नानक साहिब के दरबार का रंग चड़ने लगा।

श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को 10-12 वर्षों तक अपनी देखरेख में रखा और उनमें वे सभी गुण विकसित किए जो किसी उच्च दायित्व को निभाने के लिए आवश्यक होते हैं। गुरु साहिब ने इन गुणों की सराहना करते हुए 22 फगवां सम्मत 1610 को अपनी प्रिय पुत्री बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी से कर दिया। इस आशीर्वाद से भाई जेठा जी गुरु के दरबार के साथ-साथ गुरु परिवार का भी हिस्सा बन गए।

जब 1557 ई. में तीसरे गुरु, श्री गुरु अमरदास जी ने सामाजिक समानता के सिद्धांत को लागू करने के लिए समाज से छुआछूत को समाप्त करने का बीड़ा उठाया, तो गुरु के कुछ शत्रुओं और असामाजिक तत्वों को यह बर्दाश्त नहीं हुआ। उनमें से कुछ ने बादशाह अकबर के पास जाकर गुरुओं के विरुद्ध शिकायत की।

उनके संदेह दूर करने और उन्हें आश्वस्त करने के लिए, बादशाह ने गुरु के दरबार में एक निमंत्रण पत्र भेजा। वृद्धावस्था के कारण, तीसरे राजा ने भाई जेठा जी को गुरु के दरबार का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त किया। भाई जेठा जी ने सिख धर्म के सिद्धांतों को इतनी स्पष्टता से समझाया कि अकबर की सारी भ्रांतियाँ दूर हो गईं। सांसारिक दृष्टि से, भाई जेठा जी श्री गुरु अमरदास जी के दामाद थे, परन्तु उन्हें इस रिश्ते का ज़रा भी अभिमान नहीं था।

बौली साहिब के निर्माण के दौरान, वे भी एक विनम्र सिख की तरह सिर पर टोकरी रखकर सेवा करते थे। एक दिन, जब वे पूरे तन-मन से सेवा में लीन थे, लाहौर से उनके कुछ साथी, हरिद्वार आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हुए, श्री गोइंदवाल पहुँचे। जब उन्होंने देखा कि भाई जेठा एक मज़दूर की तरह सिर पर टोकरी ढो रहे हैं, तो वे क्रोधित हो गए। क्रोध में उन्होंने शिष्टाचार का भी त्याग कर दिया। वे श्री गुरु अमरदास जी से कहने लगे, "आपने हमारे भाई जेठा से मज़दूरी करवाकर हमारा मान-सम्मान नष्ट कर दिया है। हम आपके इस व्यवहार से बहुत शर्मिंदा हैं।"

अपने स्वजनों के कठोर वचनों के कारण भाई जेठा जी ने तीसरे गुरु से हाथ जोड़कर क्षमा याचना की और कहा, "सच्चे गुरु इन सब से अनभिज्ञ हैं, उनके कटु वचनों और दूषित विचारों पर ध्यान न दें।" ऐसा करके भाई साहिब ने न केवल अपने स्वजनों का आदर किया, बल्कि गुरु साहिब की प्रसन्नता के पात्र भी बने।

पारिवारिक दृष्टि से, उनके तीन पुत्र हुए, बाबा पृथी चंद, बाबा महादेव और श्री (गुरु) अर्जन देव जी (पाँचवें गुरु)। यद्यपि बाबा पृथी चंद परिवार के सबसे बड़े पुत्र थे, परन्तु अपने लोभी और अभिमानी स्वभाव के कारण, वे अपने गुरु-पिता के सुख (गुरगद्दी) से वंचित रहे। इस अभाव के कारण, वे जीवन भर ईर्ष्या और द्वैत की आग में जलते रहे और नानक नाम लेने वाली संगत के द्वेष के पात्र बने।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उगाया सिख धरम धर्म का पौधा विकसित होने लगा तो, सिख धर्म के केंद्र को श्री गोइंदवाल साहिब से गुरु के चक (श्री अमृतसर साहिब) में स्थानांतरित करने की योजना बनाई गई। इस योजना को व्यावहारिक रूप देने की ज़िम्मेदारी भाई जेठा जी को सौंपी गई। उन्होंने इस ज़िम्मेदारी को पूरी लगन से निभाया, जिससे 'गुरु का चक' एक जीवंत शहर बन गया।

श्री गुरु अमरदास जी अब शारीरिक रूप से काफ़ी वृद्ध हो चुके थे। यह जानते हुए कि उनके सचखंड लौटने का समय निकट आ रहा है, उन्होंने गुरु घराने की रीति के अनुसार, भाई जेठा जी को सम्मत 1631 के भादों माह में समस्त संगत और उनके परिवार की उपस्थिति में गुरु नानक पातशाह के घराने का चौथा उत्तराधिकारी (गुरु गद्दी देकर) नियुक्त किया, जिससे वे श्री गुरु रामदास जी बन गए।

चौथे गुरु, श्री गुरु रामदास जी की कृपा से माझा क्षेत्र जागृत हुआ। इसी जागृति के फलस्वरूप गुरु साहिब ने इस केंद्रीय स्थान (श्री अमृतसर साहिब) पर एक भव्य धार्मिक स्थल के निर्माण का विचार किया जो बढ़ती हुई संगत की आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। चूँकि यह स्थान नदी से दूर था, इसलिए यहाँ एक सरोवर बनाने का भी प्रस्ताव रखा गया।

ऐसा करने के पीछे गुरु साहिब का एक उद्देश्य यह भी था कि इस पवित्र स्थान पर जहाँ कानों को दिव्य बाणी की ध्वनि सुनाई दे, वहीं आँखों से हरि के घर (हरमंदिर साहिब) के भी खुले दर्शन हो सकें। इस प्रस्ताव को व्यावहारिक रूप देने के लिए संगत का पूर्ण सहयोग आवश्यक था। जैसे-जैसे यह सहयोग (तन, मन और धन से) प्राप्त होता गया, गुरु घर के कार्य भी निरंतर प्रगति करते गए। पहले सरोवर का निर्माण और फिर (गुरु अर्जन देव जी के समय में) श्री हरमंदिर साहिब का निर्माण पूरा हुआ। इन दो महान पहलों से सिख धर्म की छवि और भी निखरने लगी।

गुरु रामदास जी के पास अनेक व्यस्तताएँ थीं, फिर भी उनकी प्राथमिकता कर्म ही रहा। जब उन्हें समय मिलता, तो वे स्वयं टोकरी उठाकर अपने हाथों से ईंट, गारा और चूना आदि लगाते। उन्होंने यह सब श्रम के सिद्धांत को गौरवान्वित और स्थापित करने के लिए किया। ऐसा करते हुए, एक दिन ऐसा आया जब श्री गुरु रामदास जी और उनके पुत्र श्री गुरु अर्जन देव जी के कुशल नेतृत्व और संगत के पूर्ण सहयोग से श्री अमृतसर साहिब की धरती पर स्वर्ग (सचखंड के रूप में) की झलक दिखाई देने लगी। आज भी यह स्थान ईश्वरीय स्तुति और उपदेश का एक प्रमुख केंद्र है।

प्रकाश पर्व श्री गुरु रामदास जीः गुरु परिवार के तीन पुत्रों में सबसे छोटे, श्री (गुरु) अर्जन देव जी धर्म और संसार के मामलों में सबसे अधिक योग्य सिद्ध हुए। जहाँ वे पारिवारिक दृष्टि से पूर्णतः उत्तरदायी थे, वहीं आध्यात्मिक दृष्टि से भी वे सभी कलाओं में निपुण प्रतीत होते थे। इसी योग्यता के कारण श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अर्जन देव जी को गुरुपद का तिलक प्रदान किया।

पृथी चंद ने गुरु पिता द्वारा अपने बड़े पुत्र (पृथी चंद) की उपेक्षा करके अपने सबसे छोटे पुत्र श्री गुरु अर्जन देव जी को गुरुगद्दी देने के निर्णय का कड़ा विरोध किया, लेकिन श्री गुरु रामदास जी ने 'तख्ती बैहै तख्ताई की लायक' के सिद्धांत पर अपना तर्क दिया और केवल योग्यता को प्राथमिकता दी।

श्री गुरु अर्जन देव जी को अपना उत्तराधिकारी बनाने के बाद श्री गुरु रामदास जी गोइंदवाल साहिब चले गए। यहाँ कुछ दिन रहने के बाद, आसू माह की द्वितीया, संवत 1638 (सितंबर 1581 ई.) को ज्योति ज्योति समा गये। एक आध्यात्मिक गुरु होने के साथ-साथ, श्री गुरु रामदास जी एक उच्च कोटि के कवि भी थे, जिन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के 19 रागों और 11 अन्य रागों को मिलाकर कुल 30 रागों में बाणियों की रचना की।

ग्रुप एडिटरः अर्शदीप सिंह, मुद्रक, प्रकाशक, इंप्रेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, प्लॉट- 22, औद्योगिक क्षेत्र, फेज-2, पंचकूला। आरएनआई पंजीकरण संख्याः CHMUL/25/A1155
इस अंक में प्रकाशित सभी समाचार पीआरबी के चयन एवं संपादन हेतु हैं। अधिनियम के अंतर्गत सभी उत्तरदायित्व और उससे उत्पन्न सभी विवाद लुधियाना न्यायालय के अधीन होंगे। वर्ष 1 अंक 33